— वैदिक काल —

* आर्य शब्द इंगित करता — श्रेष्ठ वर्ग को
* सबसे पुराना वेद कौन सा — ऋग्वेद

चार वेद — ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद] वेदत्रयी या त्रयी कहा जाता
अथर्ववेद

* त्रयी नाम — तीन वेदों का
* 'वर्ण' शब्द का सर्वप्रथम नामोल्लेख — ऋग्वेद में
* वर्ण व्यवस्था से सम्बन्धित पुरुष-सूक्त माया जाता — ऋग्वेद
* ऋग्वेद — स्तोत्र एवं प्रार्थनाएं (1028 सूक्त या ऋचाएं)
  यजुर्वेद — स्तोत्र एवं कर्मकांड (बलिदान विधि)
  सामवेद — संगीतमय स्तोत्र
  अथर्ववेद — तंत्रमंत्र एव वशीकरण [20 अध्याय एवं 731 सूक्त]
  (औषधियों से सम्बंधित)
* गोपथ ब्राह्मण — अथर्ववेद से सम्बंधित
* ऋग्वेद का कौन सा मण्डल पूर्णतः सोम को समर्पित — नौवां
  ऋग्वेद में 10 मण्डल है तथा 9वे मण्डल में 114 सूक्त 'सोम' को समर्पित है।
* सामवेद का संकलन ऋग्वेद पर आधारित है। सामवेद में कुल 1810 छंद है जिनमें से 75 को छोड़कर सभी ऋग्वेद में भी है।
* भारत के अंतरंजीखेड़ा की खुदाई से लौह धातु के प्रचलन के प्राचीनतम प्रमाण मिले है।

Krishna Chaudhary

KD Job Updates

* उपनिषद पुस्तकें — दर्शन पर आधारित
* वैदिक साहित्य में मोक्ष की चर्चा मिलती — उपनिषद में
* कठोपनिषद मे यम और नचिकेता का संवाद प्राप्त होता है।
* उपनिषद काल के राजा अश्वपति शासक — केकय
* वैदिक संहिताओ का सही क्रम —

  वैदिक संहिताएं - ब्राह्मण - आरण्यक - उपनिषद
* आरंभिक वैदिक साहित्य में सर्वाधिक वर्णित नदी — सिंधु

  सिंधु नदी का ऋग्वैदिक काल में सर्वाधिक महत्व था। इसी कारण सिंधु नदी को हिरण्यनी कहा गया।
* वैदिक नदी असिक्नी की पहचान — चेनाब नदी से की गई

  ऋग्वेद में कुम्भा, क्रमु, गोमती एवं सुवास्तु नदियों का उल्लेख अफगानिस्तान के साथ आर्यों का संबंध बताता है।

*

वैदिक नदिया		आधुनिक नाम
कुम्भा	—	काबुल
परुष्णी	—	रावी
सदानीरा	—	गंडक
सुतुद्री	—	सतलज

* चतुष्टय वेदोत्तर काल में प्रचलित प्रथा —

  ब्रह्मचर्य — गृहस्थाश्रम — वानप्रस्थ — सन्यास
* वरुण देवता को वैदिक सभ्यता में नैतिक व्यवस्था का प्रधान माना जाता था। उन्हे ऋतस्यगोपा भी कहा जाता था।

KD Job Updates

* बृहस्पति जी को वैदिक देवताओं का पुरोहित
* वैदिक साहित्य में कई विदुषी स्त्रियों का उल्लेख है — जिन्होंने वेद-मंत्रों की रचना की थी —
  - अपाला
  - घोषा
  - लोपामुद्रा — अगस्त्य ऋषि की पत्नी
  - विश्ववारा
* ऋग्वैदिक काल में सोने के हार को — निष्क कहा जाता था। किन्तु परवर्ती काल में उसका प्रयोग सिक्के में हुआ।
* निष्क — गले का आभूषण
* प्राचीन भारत में निष्का — स्वर्ण के आभूषण
* बौद्ध जातक में 3 प्रकार के स्वर्ण सिक्कों का उल्लेख मिलता है।
  - निष्का — उच्च मूल्य वाली मुद्रा
  - सुवर्ण
  - मशाका — निम्न मूल्य
* बोगजकोई — यहां से प्राप्त अभिलेखों में वैदिक देवताओं एवं देवियों का नामोल्लेख प्राप्त होता है। एशिया माइनर में स्थित है।
* ऋग्वेद काल के देवता — [इंद्र, वरुण, मित्र, मारुत्य] वैदिक आर्य ईरान से होकर भारत आये।
* बालगंगाधर तिलक ने आर्यों के आदि देश के बारे में लिखा था।
* पुरुष मेध — शतपथ ब्राह्मण (यजुर्वेद का ब्राह्मण) ग्रन्थ
* शतपथ ब्राह्मण में उल्लेखित राजा विदेध माधव से संबंधित ऋषि — गौतम रहूगण

KD Job Updates

* उत्तर वैदिक काल में आर्य संस्कृति का धुर समझा जाता था — अंग तथा मगध को

* गोत्र शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम — ऋग्वेद में

* पूर्व वैदिक आर्यों का धर्म प्रमुखतः — प्रकृति पूजा और यज्ञ

* ऋग्वैदिक काल में यज्ञ की प्रधानता थी जनता मुख्यतया बलि एवं कर्मकाण्ड में विश्वास करती थी।
देवपूजा के साथ पितरों की पूजा भी होती थी।

* दशराज्ञ युद्ध (दस राजाओं का युद्ध) — परुष्णी नदी पर (रावी)

* ऋग्वेद में मातेतमा, देवीतमा एवं नदीतमा कहा गया — सरस्वती नदी को

* ऋग्वैदिक आर्यों के पंचजनो से सम्बंधित जनजाति —
यदु, द्रुह्यु, पुरु, अनु, तुर्वसु
किकट इनसे संबंधित नहीं है।

* प्राचीन काल में आर्यों के जीविकोपार्जन का मुख्य साधन — शिकार

* ऋग्वेद में 'यव' शब्द जौ के लिए प्रयुक्त किया गया।

* वैदिक काल में प्रचलित लोकप्रिय शासन प्रणाली — वंश परंपरागत राजतंत्र थी।

* अथर्ववेद में सभा और समिति को प्रजापति की दो पुत्रियां कहा गया है।

* आयुर्वेद अर्थात जीवन का विज्ञान का उल्लेख — अथर्ववेद

* ऋग्वैदिक धर्म था — बहुदेववादी (Polytheistic)

KD Job Updates

* सर्वाधिक लोकप्रिय देवता ऋग्वैदिक काल में — इन्द्र को
* ऋग्वेद में सर्वाधिक संख्या में मंत्र सम्बंधित — अग्नि से
* ऋग्वेद में युद्ध-देवता — इन्द्र को
* 800 से 600 ईसा पूर्व का काल — ब्राह्मण युग
* गायत्री मंत्र — ऋग्वेद में (तृतीय मण्डल में)
* गायत्री मंत्र की रचना — विश्वामित्र ने
* सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर और वंशानुचरित संकेतक हैं — पुराणों के
* पुराणों की संख्या — (18)
* महाभारत मूलतः जानी जाती है — जयसंहिता रूप में
* सत्यमेव जयते — मुंडकोपनिषद् से लिया गया है।
मंडूकोपनिषद् X
* ऋग्वेद की मूल लिपि — ब्राह्मी
* वैदिक कर्म काण्ड में 'होता' का सम्बंध — ऋग्वेद से
* अवेस्ता और ऋग्वेद — भाषिक समानताओं के कारण आर्यों की सभ्यता से सम्बंधित माने जाते हैं।
अवेस्ता - ईरान क्षेत्र से सम्बंधित
* वैदिक काल में अघन्या जानवर — गाय को माना गया।
* ऋग्वेद में अघन्या का प्रयोग — गाय के लिए
* संस्कारों की कुल संख्या — (16)
* जीविकोपार्जन हेतु वेद-वेदांग पढ़ाने वाला अध्यापक कहलाता था — उपाध्याय
* प्राचीन भारतीय समाज के संदर्भ में कुल, वंश तथा गोत्र परिवार से सम्बंधित है। कोश - भण्डार से सम्बंधित

KD Job Updates

बौद्ध धर्म

महात्मा बुद्ध –

जन्म - 563 ई.पू. कपिलवस्तु (लुम्बिनी)
पिता - शुद्धोधन (कपिलवस्तु के शाक्यगण के प्रधान)
माता - महामाया (रामग्राम के कोलिय वंश से)
मृत्यु - बुद्ध के जन्म के 7वे दिन

पालन पोषण – मौसी प्रजापति गौतमी
शादी – 16 वर्ष की अवस्था में यशोधरा से (शाक्यगण की)

* शहर भ्रमण के दौरान देखे गये दृश्य – वृद्ध व्यक्ति
रोगी
एक शव
सन्यासी

* अन्तिम दृश्य को देखकर मन सन्यास की ओर प्रवृत्त हुआ और 29 वर्ष की अवस्था में गृह त्याग दिया ।

* बौद्ध साहित्य में गृह त्याग की घटना – महाभिनिष्क्रमण

* गृह त्याग के पश्चात – सर्वप्रथम मुलाकात – गुरु आलार कालाम (वैशाली के)
तत्पश्चात – राजगृह के रुद्रक रामपुत्र

* गया में निरंजना नदी के किनारे पंचवर्गीय ब्राह्मण भिक्षु के साथ तपस्या पीपल के वृक्ष के नीचे 6 वर्ष की ।

* सुजाता द्वारा दिए गये खीर को खाकर तपस्या भंग की ।

* फिर समाधि – 49वे दिन ज्ञान की प्राप्ति और बुद्ध कहलाए ।
गया - बोधगया
वृक्ष – बोधिवृक्ष (शैववंशीय कट्टर शासक शशांक ने कटवा दिया)

* जन्म, ज्ञान और मृत्यु का दिन – वैशाख पूर्णिमा (बुद्ध पूर्णिमा)

KD Job Updates

* प्रथम शिष्य – गया में ही तपस्सु एवं मल्लिक (शूद्र बंजारे)
* इसके बाद सारनाथ गये, पंचवर्गीय ब्राह्मण भिक्खु को प्रथम उपदेश दिया। इस घटना को धर्मचक्रपरिवर्तन कहते हैं।
* बौद्ध धर्म की स्थापना – सारनाथ में
* आनन्द के कहने पर संघ में प्रवेश पाने वाली प्रथम महिला – प्रजापति गौतमी (वैशाली में)
* वर्षावास – प्रथम - सारनाथ
  सर्वाधिक - कोशल महाजनपद की राजधानी – श्रावस्ती में (25 वर्ष)
* निजी परिचारक – आनन्द
* चत्वारि आर्य सत्यानि – दुख है
  दुख का कारण है – कर्मकारण्य सिद्धान्त
  दुख को रोका जा सकता है।
  दुख को रोकने के उपाय हैं। (अष्टांगिक मार्ग बताया गया)
* बौद्ध धर्म के अन्तर्गत त्रिरत्न – प्रज्ञा, शील, समाधि
  अन्य त्रिरत्न – बुद्धम, संघम, धम्मम्
* महात्मा बुद्ध ने क्षणिकवाद का सिद्धान्त दिया था।
* महात्मा बुद्ध ने वेदों के अपौरुषेयता का खण्डन किया था
* प्रिय शिष्य –
  शासक - बिम्बिसार, प्रसेनजीत, अजातशत्रु, उदयन (कौशाम्बी)
  [शासनकाल में बुद्ध कौशाम्बी आये]
  राजकीय महिलाये – क्षेमा (बिम्बिसार की पत्नी)
  मल्लिका (प्रसेनजीत की पत्नी)
  नीजी परिचारक – आनन्द
  राज्यकर्ता – सुनिति वस्सकार
  चिकित्सक – जीवक
  गणिका – आम्रपाली
  कर्मकार – चुंद (सुनार/लोहार)
  डाकू – अंगुलिमाल

KD Job Updates

* महात्मा बुद्ध के जीवन से जुड़ी घटनाएं एवं प्रतिक —

माता के गर्भ में आना — हाथी
जन्म — कमल का फूल
यौवन — सांड़
गृहत्याग — घोड़ा
ज्ञानप्राप्ति — पीपल का वृक्ष
निर्वाण (मोक्ष) — पद चिन्ह
प्रथम उपदेश — चक्र → धर्म-चक्र परिवर्तन
महापरिनिर्वाण — स्तूप

* महात्मा बुद्ध के जीवन से जुड़े 8 महत्वपूर्ण स्थल —

1. लुम्बिनी — जन्म शाल के वृक्ष के नीचे
2. सारनाथ — प्रथम उपदेश (ऋषि पत्तन के मृगदाव उद्यान में)
3. राजगीर — प्रथम बौद्ध संगीति
4. वैशाली — द्वितीय बौद्ध संगीति, आम्रपाली का आवास
5. कुशीनगर — देवरिया जिले का कसिया गांव (मृत्यु स्थान) महापरिनिर्वाण
6. बौद्ध गया — ज्ञान की प्राप्ति
7. श्रावस्ती — सर्वाधिक-अनुयायी, वर्षावास, उपदेश
8. सकांरा/संकिया — स्वर्ग से महात्मा बुद्ध यहीं अवतरित हुये थे।

* त्रिपिटक — विनय पिटक
सुत्त पिटक
अभिधम्म पिटक
] बुद्ध के उपदेशों का संग्रह

* विनय पिटक — संघ जीवन के नियम एवं आचार शिक्षा
सुत्त पिटक — धार्मिक सिद्धान्त (नैतिक एवं सिद्धान्त)
अभिधम्म पिटक — दार्शनिक सिद्धान्त

* अशोकाराम विहार — पाटलीपुत्र से

KD Job Updates

बौद्ध संगीति	आयोजन वर्ष	अध्यक्ष	समकालीन शासक	आयोजन स्थल	परिणाम
प्रथम	483 ई.पू.	महाकस्सप	अजातशत्रु (हर्यक वंशीय)	राजगृह	दो पिटकों का संकलन 1. सुत्त पिटक 2. विनय पिटक
द्वितीय	383 ई.पू.	साबकमीट या सर्वकामनी	कालाशोक	वैशाली	प्रथम विभाजन 1. स्थाविरवाद 2. महासांघिक
तृतीय	253 ई.पू.	मोग्गलिपुत्ततिस्स	अशोक	पाटलीपुत्र	तृतीय पिटक का अभिधम्म पिटक का संकलन
चतुर्थ	प्रथम शताब्दी	वसुमित्र	कनिष्क	कुण्डलवन कश्मीर	विभाजन 1. हीनयान 2. महायान

* शून्यवाद के प्रवर्तक – नागार्जुन
* विज्ञानवाद के प्रवर्तक – मैत्रेयनाथ
* वज्रयान – सातवीं शताब्दी में अस्तित्व में आयी।
* विनय पिटक - जीवन के नियम
* पाल वंश ऐसा अन्तिम वंश था जिसने बौद्ध धर्म को संरक्षण प्रदान किया।
* विश्वशान्ति स्तूप – राजगीर (बिहार)
* एशिया के ज्योतिपुंज – गौतम बुद्ध
* एडविन अर्नाल्ड की पुस्तक - The Light of Asia ⇒ ललित विस्तार पर आधारित है।
* हीनयान अवस्था का विशालतम एवं सर्वाधिक विकसित चैत्यगृह स्थित है – कार्ले में (महाराष्ट्र प्रदेश)
* भूमिस्पर्श मुद्रा की सारनाथ बुद्ध मूर्ति सम्बंधित है – (गुप्तकाल से)

KD Job Updates

* अशोक के अभिलेख से सूचना मिलती है कि शाक्यमुनि बुद्ध का जन्म लुंबिनी में हुआ था — रुम्मिनदेई स्तंभ अभिलेख
* महात्मा बुद्ध का महापरिनिर्वाण मल्लों के गणतंत्र में हुआ था।
* गौतम बुद्ध ने अपनी शिक्षा के प्रचार प्रसार हेतु मगध एवं कौसल दोनो राज्यों में भ्रमण किया।
* गौतम बुद्ध का अन्तिम शिष्य — सुभद्द
* बुद्ध ने अपने जीवन की अन्तिम वर्षा ऋतु बिताई — वैशाली में
* बुद्ध कौशाम्बी उदयन के राज्यकाल में आये थे।
* सप्तपर्णी गुफा स्थित है — राजगृह में
* मृग सहित चक्र द्वारा बुद्ध के जीवन का प्रथम उपदेश का चित्रण।
* कश्मापा लामा तिब्बत के बुद्ध सम्प्रदाय के — कांग्यूपा वर्ग का
* बुद्ध का उपदेश आचरण की पवित्रता एवं शुद्धता से संबंधित है।
* अष्टांगिक मार्ग — की संकल्पना, अंग है — धर्म-चक्र प्रवर्तन सुत्त की विषयवस्तु का
  - सम्यक् दृष्टि
  - सम्यक् संकल्प
  - सम्यक् वाक
  - सम्यक् कर्मांत
  - सम्यक् आजीव
  - सम्यक् व्यायाम
  - सम्यक् स्मृति
  - सम्यक् समाधि
* संसार अस्थिर और क्षणिक है — बौद्ध धर्म से संबंध
* प्रथम शताब्दी ई. में नागार्जुन भारतीय बौद्ध भिक्षुक को चीन भेजा गया था।
* गौतम बुद्ध को एक देवता का स्थान — कनिष्क के शासन काल में
* मूर्तिपूजा की नींव रखी — बौद्ध धर्म ने
  बुद्ध की बड़ी प्रतिमा बनाई गयी — कुषाण काल में
* धर्म-चक्र ⇒ गांधार शैली की मूर्ति कला में बुद्ध के सारनाथ में हुए प्रथम धर्मोपदेश से संबद्ध प्रवचन मुद्रा है।

KD Job Updates

जैन धर्म

* जैन धर्म में 24 तीर्थंकर हुए।
* प्रथम - ऋषभदेव (आदिनाथ)
* जैन - जिन शब्द से निकलता है तात्पर्य - विजेता
* महावीर के पहले जैन धर्म को - निर्ग्रन्थ - तात्पर्य (समस्त सांसारिक बंधनो से अपना नाता तोड़ दिया हो)
* ऋषभ देव का प्रतिक चिन्ह - वृषभ
  इनका मंदिर माउण्ड आबु के समीप दिलवाड़ा में भीम प्रथम के मंत्री विमल द्वारा बनवाया गया।
* 19 वीं तीर्थंकर - मल्लिनाथ - प्रतिक चिन्ह - कलश
* 22 वे तीर्थंकर - अरिष्टनेमी या नेमीनाथ प्रतिक - हाथी
  जैन साहित्य उत्तराध्ययन सूत्र - कृष्ण के समकालीन
* पार्श्वनाथ - 23 वें और प्रथम ऐतिहासिक तीर्थंकर
  जन्म - काशीनरेश अश्वसेन के यहाँ
  माता - रानी वामा } प्रथम अनुयायी
  पत्नी - प्रभावती }
* प्रतिक चिन्ह - सर्प
  भिक्षुओं को श्वेत वस्त्र पहनने का आदेश दिया
* पारसनाथ (बिहार) के सम्मेद शिखर पर ज्ञान की प्राप्ति
  पंचमहाव्रतों में चार का प्रतिपादन इनके द्वारा ही किया गया।
  1- सत्य 2- अहिंसा 3- अपरिग्रह 4- अस्तेय
  पांचवा महाव्रत 'ब्रह्मचर्य' महावीर स्वामी द्वारा जोड़ा गया।
* महावीर — 24वें व अंतिम तीर्थंकर
  जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक
  जन्म - 540 ई पू० वैशाली के कण्डग्राम में
  पिता - सिद्धार्थ
  माता - त्रिशला (वैशाली के लिच्छवी नरेश चेटक की बहन)
  पत्नी - यशोदा

KD Job Updates

पुत्री - अनोज्जा प्रियदर्शन

दामाद - जमालि - महावीर के प्रथम शिष्य

* 30 वर्ष की अवस्था में महावीर ने गृहत्याग किया।
* 12 वर्ष की कठोर तपस्या के बाद अंग देश में ऋजुपालिका नदी के किनारे शाल वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति।
* इनको कैवल्य (सर्वोच्च ज्ञान) की प्राप्ति हुयी। ज्ञान-प्राप्ति के बाद कैवलिन, जिन (विजेता) जैसी उपाधि मिली।
* प्रारंभिक जैन साहित्य की भाषा - अर्धमागधी / प्राकृत
* गौतम बुद्ध के धर्म प्रचार की भाषा - पालि थी।
* विचारों का प्रचार-प्रसार करने के लिए महावीर ने 11 गणों की नियुक्ति की।
* महावीर के जीवन काल में सुधीगणधर की मृत्यु हो गयी, इसके बाद केवल सुधर्मन जीवित था। और इन्द्रभूति भी
* मृत्यु - 72 वर्ष की अवस्था में पावा में 468 ई.पू.
* जैन धर्म के त्रिरत्न - सम्यक दर्शन — (विश्वास को)
  सम्यक ज्ञान
  सम्यक आचरण
* पंच महाव्रत — भिक्षुओं के लिए
  अहिंसा - सत्य - अस्तेय - अपरिग्रह - ब्रह्मचर्य
  पांच अणुव्रत — गृहस्थ जीवन के लिए
  चार शिक्षा व्रत —
    - देशविरति
    - सामयिक व्रत
    - प्रोपोद्योपवास
    - वैया वृत्य
* स्याद्वाद (अनेकान्तवाद) को ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धान्त कहा गया।
* जैन दर्शन के अनुसार सृष्टि की रचना एवं पालन-पोषण सार्वभौमिक विधान से हुआ है।

KD Job Updates

* जैन धर्म में अनेक प्रकार के ज्ञान को परिभाषित किया गया है—

मति – इन्द्रिय जनित ज्ञान
श्रुति – श्रवण ज्ञान
अवधि – दिव्य ज्ञान
मनः पर्याय – अन्य व्यक्तियों के मन मस्तिष्क का ज्ञान
कैवल्य – पूर्ण ज्ञान (निर्ग्रन्थ एवं निर्तेन्द्रियों को प्राप्त होने वाला ज्ञान)

* मोक्ष के पश्चात् जीवन आवागमन के चक्र से छुटकारा पा सकता है तथा वह अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त वीर्य तथा अनन्त सुख की प्राप्ति कर लेता है। जैन शास्त्रों में इन्हें अनन्त चतुष्टय की संज्ञा दी गई है।

* जैन धर्म दो सम्प्रदायों में विभाजित हो गया।

श्वेताम्बर – स्थूलबाहु एवं उनके अनुयायी को ये सफेद वस्त्र धारण करते थे।

दिगम्बर – भद्रबाहु एवं उनके अनुयायी को। ये दक्षिणी जैनी कहे जाते थे।

* जैन संगीति (सभा)

प्रथम सभा — समय 300 ई॰ पू॰ के आस पास
स्थान - पाटलीपुत्र
अध्यक्ष – स्थूलभद्र
शासक - चन्द्रगुप्त मौर्य
परिणाम - श्वेताम्बर, दिगम्बर में विभाजित

द्वितीय सभा – समय – 512 ई.
स्थान – वलभी
अध्यक्ष – देवर्धिगण/क्षमाश्रमण
शासक - ध्रुवसेन प्रथम
परिणाम - अनेक उपांग साहित्यों की रचना

KD Job Updates

* जैन धर्म का आधारभूत बिन्दु – अहिंसा
* यापनीय जैन धर्म का एक सम्प्रदाय था – उत्पत्ति दिगंबर सम्प्राय
* जैन धर्म में ईश्वर की कल्पना नहीं की गई है। इसलिए विश्व - विनाशकारी प्रलय की अवधारणा में विश्वास नहीं करता है।
* जैन साहित्य – जैन साहित्य को आगम (सिद्धान्त) कहा जाता ये अर्धमागधी / मागधी / प्राकृत में लिखे गये है। इसके अन्तर्गत 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छेद सूत्र, 4 मूल सूत्र एवं अनुयोग सूत्र आते है।
* आजीवक सम्प्रदाय के संस्थापक – मक्खलिगोसाल → ये प्रारंभ में महावीर के शिष्य थे किन्तु बाद में मतभेद के कारण महावीर की शिष्यता त्यागकर, आजीवक सम्प्रदाय की स्थापना की। — नियतिवाद मत में विश्वास इनके अनुसार भाग्य ही सब कुछ निर्धारित करता है, मनुष्य असमर्थ होता है।
* श्रवणबेलगोला में गोमतेश्वर की विशाल प्रतिमा स्थापित करवाई – चामुंडराय ने (कर्नाटक में स्थित है)
* महामस्तकाभिषेक सम्बंधित है – बाहुबली

Krishna Choudhary

KD Job Updates

भागवत धर्म (वैष्णव धर्म)

अन्य नाम – सात्वत धर्म, पाञ्चरात्र धर्म

प्रवर्तक – कृष्ण

* छान्दोग्य उपनिषद में कृष्ण को घोर अंगिरस का शिष्य बताया गया।
* जैन परम्परा के अनुसार कृष्ण को 22वें तीर्थंकर अरिष्टनेमि के समकालिन थे।
* विष्णु का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में प्राप्त होता है ऋग्वेद में विष्णु – आकाश के देवता के रूप में जाने जाते थे।
* वासुदेव कृष्ण की पूजा सर्वप्रथम – भागवतों ने की
* कृष्ण को भगवान के रूप में पूजे जाने की जानकारी – पाणिनीकृत अष्टाध्यायी से
* भागवत धर्म की पहली जानकारी – हेलियोडोरस का बेसनगर का गरुण स्तम्भ अभिलेख – केवल वासुदेव से संदर्भित है।
* हेलियोडोरस तक्षशिला के सुक्रेटाइडीज वंशीय यूनानी शासक एण्टीयालकीड्स का दूत बनकर शुंग शासक भागभद्र के दरबार में आया।
* भागवत धर्म में भक्ति के 9 रूपो की चर्चा है।
* तोषा नामक महिला ने मथुरा के पास मोरा नामक गाव के एक कुएं की दिवार पर अभिलेख खुदवाया था जिसमें पंचवृष्णि वीरों का उल्लेख है। – [वासुदेव - संकर्षण – प्रद्युम्न - अनिरुद्ध - साम्ब]
* भागवत धर्म में चक्रव्युह की अवधारणा विकसित हुई।
* गुप्तकाल में वैष्णव धर्म – चरमोत्कर्ष पर था
* गुप्तवंशीय शासक अधिकांश – भागवत धर्मानुयायी थे
* गुप्त कालीन में शासको का राजकीय चिन्ह – गरुड़
* गुप्त काल में विष्णु के अवतारवाद की अवधारणा काफी प्रसिद्ध हुयी।
* विष्णु के 10 अवतार माने जाते है।

KD Job Updates

* गुप्तकाल में सर्वाधिक लोकप्रिय – वराह
* वराह – सागर से पृथ्वी का उद्धार करते हुए
* बुद्ध को 9वां अवतार माना जाता है।
* 10वां कल्कि के रूप में होना बाकी है।
  कल्कि का प्रतीक चिन्ह – मैत्रेय

मत्स्य	परशुराम
कूर्म	राम
वराह	कृष्ण
नरसिंह	बुद्ध
वामन	कल्कि

विष्णु के 10 अवतार

* बेसनगर अभिलेख का हेलियोडोरस – तक्षशिला का निवासी
* प्रस्थानत्रयी – उपनिषद, ब्रह्मसूत्र और भगवद्गीता को वेदान्त की प्रस्थानत्रयी कहा जाता है।

अलवार संत – वैष्णव धर्म के अनुयायी (संख्या – 12)
प्रसिद्ध - नाम्मालवर, कुलशेखर – (केरल शासक)

शैव धर्म

* इस धर्म के उदय होने की जानकारी - चौथी शताब्दी ई.पू. में मेगस्थनीज के ग्रंथ – इंडिका से
* इस ग्रन्थ में डायनोसिस (शिव) हेराक्लीज (कृष्ण) नामक दो भारतीय देवताओं का वर्णन मिलता है।
* शैव धर्म के रूप – पाणिनी के अष्टाध्यायी के अनुसार – 4
  शैव – पाशुपत – कापालिक – कालामुख
* सबसे प्रसिद्ध – पाशुपत सम्प्रदाय – (सबसे प्राचीन भी)
  ↓ संस्थापक
  [लकुलीश थे] – शिव का 28वां अवतार माना जाता है।
* कापालिक के इष्टदेव – भैरव
* नयनार संत – शिव की उपासना करने वाले (कुल संत – 63)
  पल्लवों के शासन काल में शैव धर्म के अन्तर्गत
* प्रसिद्ध – अप्पार, सुंदरमूर्ति, मणिक्कवाचगर
* मणिक्कवाचगर ने तिरुवासगम नामक प्रसिद्ध पुस्तक की रचना की

Krishna Chaudhary
KD Job Updates

* महायान बौद्धधर्म में बोधिसत्व अवलोकितेश्वर को — पद्मपाणि नाम से भी जानते है।

* नागार्जुन माध्यमिक बौद्ध सम्प्रदाय के थे।

* बौद्धशिक्षा का केन्द्र — विक्रमशिला
नालंदा
बलभी — (गुजरात)

* नालंदा विश्वविद्यालय के संस्थापक — कुमार गुप्त (गुप्तकाल में) बौद्धधर्म दर्शन के लिए प्रसिद्ध

* मध्यकाल में बौद्धो की वज्रयान शाखा सबसे अधिक प्रभावशाली थी।

Krishna Choudhary

KD Job Updates